EDUZONE: International Peer Reviewed/Refereed Multidisciplinary Journal (EIPRMJ), ISSN: 2319-5045
Volume 11, Issue 1, January-June, 2022, Impact Factor: 7.687 Available online at: www.eduzonejournal.com

रूसों की सामान्य इच्छा

Dr. Rajkumar Siwach

Associate Professor, Govt. College Jassia (Rohtak)-124303

जीन जैक्स रूपों का जन्म 1712 में निर्धन आइजक नामक घड़ी साज़ के यहाँ स्विट्ज़रलैंड के प्रसिद्ध नगर जैनेवा में हुआ। जन्म के समय ही उसकी माता का देहान्त हो गया और बचपन से ही वह बुरी संगत में पड़ गया। लगभग 12 वर्ष की छोटी आयु में ही रूसो को एक कठोर संगतराश (खुदाई का काम करने वाला) के पास काम करना पड़ा, जो उसके साथ दुर्व्यवहार भी करता था। परिस्थितियों के कारण, रूसो को पेट भरने के लिए न केवल कठोर परिश्रम करना पड़ा. बल्कि उसने झूठ बोलने व चोरी की कला भी सीखी। अन्त में, अपने मालिक से तंग आकर वह 16 वर्ष की आयु में घर से भाग गया।इसके पश्चात् रूसो ने 20 वर्ष फ्रांस में आवारागर्दी करते हुए बिताये। बुरी संगति में पड़ने के कारण वह भूतकाल -अथवा भविष्य की ओर न देखकर केवल वर्तमान को ही देखता था। उसने अनेक स्त्रियों के साथ प्रेम सम्बन्ध चलाए ये सम्बन्ध अस्थायी ही रहे और वह कभी विवाह न कर सका। एक शराब की दुकान की महिला के साथ सम्बन्ध खते हुए पाँच अवैध बच्चों को जन्म दिया। अपने जीवन के इसी निरुद्देश्य पूर्ण युग में उसने निर्धन जनता के विचारों नौर भावनाओं को जाना। भावुकता की अक्षय निधि लेकर अपनी सहमी, डरी, भूखी आँखों से उसने समाज की ■रूपता और व्यक्ति के कोढ़ के धब्बे देखे अनुभव की इस विस्तृत बहुमुखी पाठशाला में उसका अध्ययन चलता का स्वाध्याय के बल पर उसने ज्ञान प्राप्त किया। धर्म के विषय में रूसो सदैव अस्थिर रहा है और कभी कैथोलिक का और कभी प्रोटेस्टेन्ट मत का अनुयायी रहा है। 1749 में उसने एक प्रतियोगिता का समाचार पड़ा। प्रतियोगिता का विषय था, "विज्ञान कला उन्नति में एक जीवन को उन्नत किया है या उसे भ्रष्ट किया है।" इसके पश्चात् रूसो की सुप्त चेतना व साहित्यिक प्रतिभा जागृत हुई और लिखना उसका व्यवसाय बन गया। में उसने डी० जॉन की विद्यापीठ की अन्य प्रतियोगिता में भाग लिया परन्तु असफल रहा। रूसो कुछ समय के जैनेवा गया परन्तु फिर लौट आया। फ्रांस की सुप्रसिद्ध लेखिका मदाम एपीने ने पेरिस के रूसो के अध्ययन के लिए कुटिया बनवा दी जहाँ उसने रूसो ने मनुष्य को स्वाभाविक रूप से अच्छा घोषित किया है। उसका मानना है कि मनुष्य शान्तिप्रिय, चिन्तारहित, साधारण और दूसरों से सहयोग करने वाला है। उसमें न तेरे-मेरे की चिन्ता होती है और न भविष्य के प्रति चिन्ता । वह घृणा, द्वेष, ईर्ष्या और अहंकार आदि दुर्भावनाओं से मुक्त होता है। उसका जीवनयापन प्रकृति की विश्रामदायिनी गोद में होता रहता है। मनुष्य दूसरे से सहयोग करने वाला है। रूसो न तो मनुष्य को हॉब्स की तरह क्रूर और हिंसक मानता है और न ही लॉक की तरह नैतिक और परोपकारी मानता है। इसको स्पष्ट करते हुए रूसो का मानना है कि मनुष्य की प्रकृति पशुओं जैसी नहीं होती, लेकिन कला, विज्ञान और संस्कृति उसे पथभ्रष्ट करके उसकी अच्छाइयों को धूमिल कर देती हैं। रूसो मनुष्य को एक सामाजिक प्राणी स्वीकार करता है। वह आशा व्यक्त करता है कि मनुष्य को पतन की राह पर चलने से रोका जा सकता है और उसमें पुनः जीवन की स्वर्णिम श्रेष्ठता जगायी जा सकती है। मनुष्य सबसे पहले अपने आप से प्यार करता है। वह अपने हित को सबसे पहले प्राथमिकता देता है। आत्मरक्षा की भावना से ही मनुष्य स्वयं को प्राकृतिक संकटों और हिंसक जानवरों से बचा कर रखता है। यदि मनुष्य में आत्मरक्षा की भावना न हो तो वह बहुत पहले ही समाप्त हो गया होता। मनुष्य अपनी आत्मरक्षा की भावना को कभी विस्मृत नहीं होने देता रूसो के अनुसार मानव स्वभाव की दूसरी प्रवृत्ति सहानुभूति अथवा परस्पर सहायता की भावना है। यह भावना सभी

जीवधारियों में पायी जाती है। रूसो का विचार है कि मनुष्य अपनी प्राकृतिक अवस्था में दूसरे मनुष्यों के कष्ट देखकर द्रवित हो उठता था। अतः मनुष्य स्वाभाविक रूप से एक-दूसरे की सहायता करना चाहते हैं मनुष्य निजी हित और सामाजिक हित के कार्यों को एक साथ नहीं सकता। ये दोनों प्रवृत्तियां एक-दूसरे से विपरीत होती हैं। इसलिए मनुष्य इन दोनों प्रवृत्तियों की संतुष्टि में लगा है और एक समझौतावादी हल खोजने में प्रयासरत रहता है। दोनों प्रवृत्तियों में बार-बार समझौता कराने के प्र मनुष्य में एक नयी भावना उत्पन्न करते हैं, जिसे अन्त:करण कहते हैं। यह एक प्राकृतिक उपहार है। 'अन्तःप्रेरणा मनुष्य के उचित कार्य करने की इच्छा जागृत करती है। विवेक मनुष्य के अन्तः करण का मार्गदर्शन कर है और वह बतलाता है कि उसे क्या करना चाहिए और क्या नहीं। विवेक मनुष्य का नैतिक पथप्रदर्शन करता है मानव में अच्छाई के तत्त्वों को स्वीकार करते हुए रूसो यह भी मानता है कि मनुष्य का आत्मप्रेम उसे दम्भी देता है। घमण्ड मनुष्य में समस्त बुराइयों को उत्पन्न करने वाला है। यह मनुष्य के विवेक को भड़का कर उससे वास्तविक प्रकृति को विस्मृत कर देता है। रूसो के विचारानुसार प्राकृतिक अवस्था में मनुष्य स्वच्छन्दतापूर्वक एक भद्र-वनचारी का जीवन व्यतीत करता था। उसका जीवन साधारण, पाप-रहित और चिन्ता मुक्त नष्ट हो ग था। उसके पास कोई सम्पत्ति अथवा घर नहीं था और न ही वह इसकी जरूरत महसूस करता था। मनुष्य जंगलों में रहता था और कन्द-मूल आदि पर निर्भर रहता था। वह जहाँ चाहता था ठहर जाता था और अगले दिन उस स्थान को छोड़ देता था। उसके पास वस्त्र इत्यादि नहीं थे और न ही वह इनकी आवश्यकता अनुभव करता था। इस अवस्था में मनुष्य भूख प्यास और मत्यु से बेखबर जंगली जीवन व्यतीत करता था। इसलिए मनुष्य को अच्छे-बुरे अथवा उचित-अनुचित का ज्ञान नहीं था। इस अवस्था में वस्तुएं सर्व सुलभ थीं और स्पर्द्धा का नाम न था मनुष्य वर्तमान से ही संतुष्ट था और उसे भविष्य के संग्रह की चिन्ता न थी। युद्ध की संभावना दूर तक दिखाई नहीं देती थी। रूसो के मतानुसार प्राकृतिक अवस्था में मानवीय जीवन निर्बाध था और यह सभी बंधनों से मुक्त एक स्वर्गीय अवस्था थी। प्राकृतिक अवस्था को नष्ट करने के लिए दो तत्व उत्पन्न हुए- जनसंख्या में वृद्धि और तर्क का उदय । जनसंख्या का वृद्धि और विवेक ने आर्थिक विकास को बढ़ावा दिया। इससे सम्पत्ति रखने की इच्छा जागृत हुई। मनुष्य भूमि के एक टुकड़े के चारों ओर एक रेखा खींच कर कहा कि "यह भूमि मेरी है।" व्यक्तिगत सम्पति के उदय की ओर "व्यक्तिगत सम्पत्ति की भावना ने मनुष्य में तेरे-मेरे का भाव उत्पन्न किया। इससे मानवीय समाज की समानता नष्ट हो गई और असमानता ने जन्म लिया। समाज में प्रतियोगिता की भावना उदय हो गई। इस अवस्था में मनुष्य भू स्वामित्व के कारण जंगली जीवन को छोड़कर कृषि करने लगे थे। कृषि के उद्भव और पशु इत्यादि के स्वामित्व ने मनुष्यों में धनी निर्धन की भावना भर दी जिसके फलस्वरूप स्वार्थ, द्वेष, घृणा और हिंसा आदि दुर्गुणों का प्रादुर्भाव हुआ। शक्तिशाली व्यक्तियों ने कमजोर व्यक्तियों का शोषण करना शुरू कर दिया और हिंसा, लड़ाई तथा दासता अपने समय के समाज से काफ़ी असन्तुष्ट था। उसका विचार था कि सभी व्यक्ति दासों का जीवन व्यतीत थे और कोई भी सच्चे शब्दों में स्वतन्त्र नहीं था। उसका कहना था "मनुष्य स्वतन्त्र पैदा हुआ था, परन्तु वह काया में जकड़ा हुआ है। रूसी के जिस प्रकार वृक्षों के झुंड में वृक्ष वास्तव में उस वृक्ष से कम वृक्ष होता है जो अकेला खड़ा होता है, उसी प्रकार पराधीन समाज की अपेक्षा प्राकृतिक अवस्था में वास्तव में मनुष्य है। रूसो के लिए, अरस्तू की तरह, वस्तु की प्रकृति वही है जो सर्वोत्तम सम्भव परिस्थितियों में हो सकती मनुष्य अपने व्यक्तित्व का विकास स्वतन्त्र रह कर ही कर सकता 1 न कि दास बन कर। रूसो का कहना है कि वह वहां पर सम्भव है जहां मनुष्य दूसरे मनुष्यों की आज्ञा का पालन 1 करके कानून का पालन करते हैं। कानूनों ही मनुष्यों को न्याय और स्वतन्त्रता प्रदान करता है और "यह सभी की इच्छाका वैधानिक अंग है जो प्राकृतिक" स्वतन्त्रता को मनुष्यों में लागू करता है, यह वह ईश्वरीय आवाज़ है जो प्रत्येक नागरिक को सार्वजनक विवेक का पालन करने के लिए बाध्य करती है और उसे अपने

निर्णय के अनुसार कार्य करने की शिक्षा देता है न कि स्वयं अन्तः विरोध के पालन का परन्तु यह कानून क्या है ? रूसो ने इस कानून को सामान्य इच्छा का नाम दिया है।" रूसो के अनुसार, "राजनीतिक समाज एक जीव-सावयव के तुल्य है जो मनुष्य से मिलता-जुलता है। राज्य सावयव तथा जीव-सावयव के विभिन्न अंगों में समानता बताते हुए रूसो ने कहा ... प्राकृतिक अवस्था में जब मनुष्य की दशा बहुत खराब हो गई तब मनुष्यों के सामने मुख्य समस्या यह थी कि इन सामाजिक संस्थाओं के तथा प्राकृतिक अवस्था की स्वतन्त्रता, समानता तथा व्यक्तिवाद में सामंजस्य किस प्रकार स्थापित किया जाए। रूसो ने इस समस्या को इन शब्दों में वर्णन किया है, "समस्या एक ऐसा समुदाय निर्माण करने की शक्ति है जो समस्त सामाजिक शक्ति के द्वारा समुदाय के प्रत्येक व्यक्ति के धन तथा सम्पत्ति की रक्षा करे और जिस समुदाय में प्रत्येक अपने को भुला दे, परन्तु फिर भी केवल अपनी आज्ञा का पालन ही करता रहे और पहले के समान स्वतन्त्र बना रहे।"" इस समस्या का हल करने के लिए मनुष्यों ने सामाजिक समझौता किया। यह समझौता इस प्रकार था, "हम में से प्रत्येक अपने व्यक्तित्व और पूर्ण शक्ति को सामान्य प्रयोग के लिए, सामान्य इच्छा के सर्वोच्च निर्देशन के अधीन सौंप देता है और प्रत्य... समझौते के अनुसार सभी मनुष्यों ने अपने समस्त अधिकार किसी व्यक्ति को न देकर सम्पूर्ण समाज को दे दिए। मनुष्यों ने अपने सभी अधिकार समाज को सौंप दिए थे, तथापि उन्होंने उन अधिकारों को अपने पास अवश्य रख लिया जो विशुद्ध रूप से व्यक्तिगत थे। समझौते के अनुसार व्यक्ति कुछ नहीं खोते क्योंकि, "जिस अधिकार को व्यक्ति त्याग देता है। वही अन्य के ऊपर उसे प्राप्त हो जाता है। जो कुछ वह त्यागता है, उसके समान ही उसे प्राप्त हो जाता है, समझौता कोई ऐसी घटना नहीं है जो केवल एक बार ही घटी बल्कि यह कई बार घटी है। रूसो के अनुसार चूंकि सभी व्यक्तियों ने अपनी व्यक्तिगत इच्छा का समर्पण सामूहिक इच्छा को दिया। इसलिए सामान्य इच्छा अथवा समाज सम्प्रभु है। प्रत्येक व्यक्ति राज्य अविभाज्य अंग होने के कारण राज्य से अलग नहीं हो सकता और न ही राज्य के विरुद्ध कोई कार्य कर सकता है। समझौता एक ही हुआ और यह समझौता व्यक्ति और समाज में हुआ। रूसो के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति की इच्छा सामान्य इच्छा में विलीन होती है। सामान्य इच्छा व्यक्तिगत इच्छा के विपरीत किसी विशेष वर्ग अथवा व्यक्तियों के हित की रक्षा न करके समाज के सभी लोगों के हितों की रक्षा करती है। रूसो का कहना है कि प्रत्येक व्यक्ति की इच्छा दो प्रकार की होती है-यथार्थ इच्छा तथा आदर्श इच्छा | रूसो के अनुसार यथार्थ इच्छा वह इच्छा है जो स्वार्थपूर्ण, संकीर्ण तथा अविवेकहीन होती है। जब व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए कार्य करता है तब वह यथार्थ इच्छा के वशीभूत होता है। यह इच्छा सामान्य हित की अपेक्षा व्यक्ति के स्वार्थ हित की पूर्ति करती है। जबकि सामान्य इच्छा सर्व साधारण के हितों की रक्षा करती है। यथार्थ इच्छा के विपरीत आदर्श इच्छा (Real will) वह इच्छा है जो विवेक, ज्ञान तथा सामाजिक हित पर आधारित होती है। रूसो के अनुसार आदर्श इच्छा श्रेष्ठ इच्छा है तथा स्वतन्त्रता का चिह्न है। यह मनुष्यों की उत्कृष्ट इच्छा है जो सुसंगठित, स्वार्थविहीन, कल्याणकारी तथा सुसंस्कृत होती है। यह इच्छा व्यक्ति में स्थाई रूप से निवास करती है। इस इच्छा के वशीभूत होकर मनुष्य अपने हित की न सोच कर सार्वजनिक हित का चिन्तन करता है। रूसो के अनुसार यथार्थ इच्छा व्यक्ति के 'निम्न स्व' पर तथा आदर्श इच्छा उसके 'श्रेष्ठ स्व' पर आधारित होती है।आदर्श इच्छा जीवन के समस्त पहुलओं पर व्यापक रूप से दृष्टिपात करती है। यह विवेकपूर्ण इच्छा है। यह व्यक्ति और समाज के सामंजस्य में प्रदर्शित होती है।"आदर्श इच्छा सदैव सामान्य इच्छा) के अनुरूप होती है। इस प्रकार सामान्य इच्छा समाज के व्यक्तियों की आदर्श इच्छाओं का निचोड़ अथवा उसका संगठन और समन्वय है। सामान्य इच्छा व्यक्तियों के निजी हितों का प्रतिनिधित्व न करके सामूहिक हित का प्रतिनिधित्व करती है। सभी व्यक्ति अपने सम्मिलित लाभों को सामान्य इच्छा के प्रति समर्पित करते हैं। सामान्य इच्छा में व्यक्तिगत हितों का कोई स्थान नहीं है। सामान्य इच्छा की व्याख्या करते हुए रूसो

ने कहा है, "मेरी सामान्य इच्छा के अनुबन्ध में सभी लोग अपना सर्वस्व राज्य को सौंप देते हैं। राज्य का हित सभी नागरिकों का सर्वश्रेष्ठ हित है।" रूसो के विचारानुसार सामान्य इच्छा के निर्माण की प्रक्रिया सभी की इच्छा से आरम्भ होती है। मनुष्य समस्याओं को पहले स्वयं के दृष्टिकोणों से देखता है जिसमें उसकी यथार्थ तथा आदर्श दोनों इच्छाएं शामिल रहती हैं परन्तु राजनीतिक चेतना वाला व्यक्ति अपने विवेक के आधार पर यथार्थ इच्छा को समाप्त देता है और केवल आदर्श इच्छा ही बची रहती हैं। आदर्श इच्छाओं का समन्वय ही सामान्य इच्छा को जन्म देता है। रूसो के अनुसार सामान्य इच्छा सभी की इच्छाओं का योग नहीं है क्योंकि हो सकता है कि सभी अपने स्वार्थ के लिए ही इच्छा रखते हों न कि सामान्य हित के लिए। रूसो के लिए यह आवश्यक है कि सामान्य इच्छा की अभिव्यक्ति के लिए सर्वसम्मति आवश्यक है और न ही सर्वसम्मति का होना सामान्य इच्छा का गारंटी का व्यावहारिक हल है। सामान्य इच्छा में भावना की प्रधानता है जबकि समस्त की इच्छा में संख्या पर जोर दिया जाता है। सामान्य इच्छा सदैव सामूहिक हित में होती है किसी इच्छा को सामान्य इच्छा होने के लिए यह आवश्यक है कि वह सामान्य व्यक्तियों की इच्छा न होकर उसका आधार सामान्य हित हो। रूसो के मतानुसार सामान्य इच्छा बहुमत की इच्छा भी हो सकती है, यदि उसका उद्देश्य सभी का हित है। परन्तु सामान्य इच्छा सदैव बहुमत की इच्छा नहीं होती क्योंकि हो सकता है कि बहुमत विशेष हितों के लिए हो न कि समस्त के लाभ के लिए। बहुमत की अथवा एक व्यक्ति की इच्छा भी सामान्य इच्छा हो सकती है यदि वह सामान्य हित में है। परन्तु रूसो का कहना है कि सामान्य इच्छा साधारणतया बहुमत की इच्छा होती है क्योंकि बहुमत कम गलतियां करता है और अधिक व्यक्तियों के लिए भ्रष्टाचारी बनना कठिन होता है और उनके लिए आदर्श इच्छाओं की उपेक्षा करना भी आसान नहीं होता है। सामान्य इच्छा सदैव युक्ति संगत होती है, इसलिए उसमें कभी परस्पर विरोध नहीं हो सकता है। अत: यह विभिन्नता में एकता स्थापित करने वाली होती है। रूसो के अनुसार, सामान्य इच्छा सम्प्रभु है। रूसो ने सामान्य इच्छा को प्रायः वही निरंकुश और असीमित शक्तियां दी हैं सामान्य इच्छा अदेय और अविभाज्य है। सामान्य इच्छा अस्थायी न होकर स्थायी है। यह मनुष्यों के स्वभाव और चरित्र का एक अंश बन जाती है। रूसो के अनुसार सामान्य इच्छा सभी कानूनों का स्रोत है। कानून का उद्देश्य किसी विशेष व्यक्ति या वर्ग का हित न होकर सार्वजनिक कल्याण होता है और पूरा समाज कानून पर विचार करता है तो वास्तव में अपने ही हित पर विचार करता है और तभी यह विचार निर्णय लेने पर कानून का रूप धारण करता है। ऐसे कानून कभी भी अन्यायपूर्ण नहीं होते क्योंकि कानून निर्माता अपने विरुद्ध ही कानून नहीं बना सकते हैं। इसलिए कानूनों का पालन करना मनुष्यों का परम कर्त्तव्य है और कानूनों का पालन करते हुए व्यक्ति स्वतन्त्र रह सकते हैं। रूसो के अनुसार सामान्य इच्छा कभी गलती नहीं करती। इसका सदैव औचित्य होता है, क्योंकि यह सभी के हित में होती है। सामान्य इच्छा का उद्देश्य सदैव सारे समाज का कल्याण करना होता है क्योंकि सामान्य इच्छा का आधार ही सामान्य हित है। सामान्य इच्छा राज्य का आधार होती है रूसो की 'सामान्य इच्छा का सिद्धान्त' राजनीतिक चिन्तन की एक महान् देन है। उसका यह विचार है कि राज्य की उत्पत्ति का कारण व राज्य का आधार 'सामान्य इच्छा' ही है।

सन्दर्भ सूची

[1] पाश्चात्यराजनीतिक चिंतन:- डॉ. बी. एल. फडिया- साहित्य भवन पब्लिकेशन- आगरा

[2] राजनीतिक चिंतन के आचार्य- खंड I- लेखक:- माइकेलेवि फोस्टर अनुवादक डॉ. ओमप्रकाश गाबा-हिंदी माध्यम कार्यन्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

[3] पाश्चात्य राजनीतिक विचारक- ओमप्रकाश गाबा नेशनल पब्लिशिंग हाउस 2018

[4] पाश्चात्यराजनीतिक विचारो का इतिहास- एच. सी. शर्मा ओमेगा पब्लिकेशन, न्यू दिल्ली 2020

[5] Western Political Thought- O.P. Gauba- National Publishing House 2022
[6] lf{kIr bfrgkl egs"k dqekj o.kZeky Cosmos Publication – Delhi
[7] Hkkjr dk izkphu bfrgkl jke "kj.k "kekZ Oxford University Press New Delhi
[8] Rajni Kothari Politics in India
[9] Subhash Kashyap Dal Badal aur Rajyon ki Rajneeti
[10] M.V. Paylee: Constitution Govt. in India
[11] Marris Jones W.H. : Parliament in India
[12] Palmer Narman D: The Indian Political System
[13] Basu Durga Das, Constitution of India
[14] Johri JC : Indian Govt & politics
[15] Gulshan Rai : Bhartiya Shashan & Rajneeti
[16] Nanda S.S : Bhartiya Sarkar aur Rajneeti